Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 3, Issue 2 - 2018

लोकतंत्र के लिए चुनौती मॉब लिंचिंग: युवाओं की अवधारणा का अध्ययन

निधि दुबे*, अंजना शर्मा*, तसनीम खान*, मोहित कुमार*

शोध सार (Abstract)

मॉब लिंचिंग या भीड़ के द्वारा हत्या किए जाने की घटनाएं हाल के दिनों में बहुत बढ़ी हैं। इन घटनाओं के पीछे की वजह क्या है, क्या हमारा समाज दहशत में है, क्या किसी को किसी पर भरोसा नहीं रहा, इस तरह की घटनाएं क्यों बढ़ी रही हैं। क्या समाज में कोई डर या भ्रम पैदा किया जा रहा है। बच्चा चोरी की अफवाह, चोटी काटने वाली औरत की अफवाहें, गौहत्या ये समाज का हिस्सा क्यों बन रही हैं। हाल-फिलहाल के दिनों में भीड़ ने एक के बाद एक कई इंसानों की जान ले ली है। हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने देश भर में चल रही मॉब लिंचिंग पर केंद्र और राज्य सरकारों को कड़ी टकार लगाई। न्यायालय ने कहा कि लोकतंत्र की जगह भीड़तंत्र नहीं ले सकता और इससे निपटने के लिए सरकारें अलग कानून बनाएं। सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी इस संदर्भ में भी है कि केंद्र और राज्य सरकारों का रुख मॉब लिंचिंग को लेकर कड़ा नहीं है और उसने यह भी कहा है कि भीड़ को फैसला करने का अधिकार नहीं दिया जा सकता। इस विवेचनात्मक शोध में मामले पर युवाओं की अवधारणा का अध्ययन किया गया, जिसके निष्कर्षों में यह पता चला है कि लोग इस संबंध में जागरूक हैं पर इस मामले में मीडिया की भूमिका पर वे प्रश्नचिन्ह खड़ा करते हैं।

प्रस्तावना

बीते दिनों में ऐसी कितनी ही घटनाएं हुई हैं, जब भीड़ ने मिलकर किसी व्यक्ति को मार डाला। ये अफवाहें कहां से आ रही हैं, जो भीड़ के ही बीच में किसी एक व्यक्ति को गुनाहगार साबित कर रही हैं? ये न्याय की ताकत भीड़ के बीच में क्यों जा रही है, जो सिर्फ अफवाह के आधार पर समाज में 'मौत' की सजा का ऐलान कर रही है? आखिर अचानक इतने लोग एक साथ एक ही मकसद से कैसे इकट्ठे हो जाते हैं? ये पहलू जितना मनोविज्ञान का है, उतना ही सामाजिक अस्थिरता का भी है। इससे भी कहीं ज्यादा यह राजनीतिक साजिशों और कानून के ऊपर से उठे भरोसे का मामला मालूम होता है।

बच्चा चोरी की अफवाह, चोटी काटने वाली औरत की अफवाहें, गौहत्या ये समाज का हिस्सा क्यों बन रही हैं। ऐसे मामलो में भीड़ ने एक के बाद एक कई इंसानों की जान ली है। इसकी शुरुआत

*पीएचडी शोधार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

2017 में नोएडा के बिसहड़ा गांव में मोहम्मद अखलाक की हत्या से हुई। अखलाक को घर में गौमांस रखने का आरोप लगाकर पीट-पीट कर मार दिया गया। ईद से पहले हरियाणा के बल्लभगढ़ में 16 साल के जुनैद की हत्या ट्रेन में सीट को लेकर हुए एक मामूली विवाद में कर दी गई। जुनैद दिल्ली के चांदनी चौक से ईद की खरीदारी कर अपने भाइयों के साथ लौट रहा था। इससे पहले कश्मीर में सुरक्षा अधिकारी मोहम्मद अयूब पंडित को स्थानीय लोगों ने निर्वस्त्र कर पीट-पीट कर इसलिए मार डाला क्योंकि वो मस्जिद के बाहर लोगों की तस्वीर खींच रहे थे।

मॉब लिंचिंग का लोकतंत्र पर खतरा

हाल ही में उच्चतम न्यायालय ने देश भर में हुई मॉब लिंचिंग की घटनाओं पर केंद्र और राज्य सरकारों को कड़ी फटकार लगाई। अदालत ने कहा कि लोकतंत्र की जगह भीड़तंत्र नहीं ले सकता और इससे निपटने के लिए सरकारें अलग कानून बनाएं। सर्वोच्च न्यायालय ने अपनी टिप्पणी में कहा है कि केंद्र और राज्य सरकारों का रुख मॉब लिंचिंग को लेकर कड़ा नहीं है। अदालत ने यह भी कहा है कि भीड़ को फैसला करने का अधिकार नहीं दिया जा सकता। इससे कानून बनाने वाली भी भीड़ ही होगी और कानून तोड़ने वाली भी और दोनों ही सूरत में कार्यपालिका, विधायिका और न्यापालिका के अस्तिव और ताकत पर सवाल खड़े होंगे। यानी मॉब लिंचिंग लोकतंत्र के लिए इतना बड़ा खतरा है कि अगर इसे राजनीतिक टूल की तरह इस्तेमाल किया गया, तो परिणाम बहुत बुरे होंगे।

मॉब लिंचिंग और युवा

कहने को तो भारत सबसे ज्यादा युवा आबादी वाला देश है। दावा ये भी है कि युवा शिक्षित बन रहे हैं, वॉट्सऐप, फेसबुक और टेक्नोलॉजी का उपयोग करके आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन वही युवा आखिर भ्रम और भ्रांति फैलाने वाली खबरों का हिस्सा कैसे बन जाते हैं। कैसे किसी खास स्लोगन के साथ बढ़ाए गए मैसेज से वो खुद को और अपने धर्म को जोड़ लेते हैं। क्या ये सही है कि मॉब लिंचिंग सुनियोजित तरीके से खास वर्ग के युवाओं को टार्गेट करके धार्मिक आधार पर आगे बढ़ती है।

सामाजिक संरचना और धर्मनिरपेक्षता के लिए चुनौती

बचपन में मां-बाप किसी भी मुश्किल घड़ी में समूह में आने की नसीहत देते थे। गांव में चोर आते थे, तो लोग समूह में आते थे। विपदा, आपदा के समय लोग इकट्ठे होते थे, लेकिन अब जब भीड़ जुटती है, तो मकसद उलट जाता है। भीड़ का रूप बदल चुका है, भीड़ भयावह हो चुकी है और ये हमारी सामाजिक संरचना के लिए मुसीबत बन गई है। बहुत रिपोर्ट ये भी दावा करती हैं कि मरने वाले लोग खास वर्ग से तालुक्क रखते थे और मारने वालों के पहनावों में समानता थी। मसलन, मारने वालों के गले में दुपट्टे थे और हाथों में एक तरह की लाठियां, तो क्या ये सेकुलरिज्म के दिखावे की ताल ठोंकने वाले समाज को बांट रहे हैं। क्या खास किस्म का एजेंडा चलाकर ये सब किया जा रहा है।

कुल मिलाकर उन्मादी भीड़, कब और किस तरह से आपको अपना शिकार बना ले, कहा नहीं जा सकता। ये एक ऐसा तंत्र है जिसकी न तो कोई विचारधारा है न ही कोई सरोकार। वो कहीं भी किसी भी बात पर आक्रामक हो जाता है और जिस किसी से भी उसको नफरत या घृणा होती है वो उसे उसी वक्त सजा देने का फैसला कर लेता है। मॉब लिंचिंग समाज को बांट रही है, तोड़ रही है और जोड़ने में जमाने लग सकते हैं।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

साहित्य समीक्षा

अर्नाल्ड संगमा ने (2017) में अपने शोध मॉब लिंचिंग: एन अप्राइजिंग ऑफेंस नीडेड टू बी स्ट्रेन्यूस अंडर द इंडियन लीगल सिस्टम ने अपने शोध में बताया कि पिछले कुछ समय से इंडिया में भीड़ द्वारा किसी भी व्यक्ति को मारना का चलन तेजी से बढ़ रहा है। किसी कृत्य में किसी व्यक्ति को गलत पाए जाने पर खुद ही उसे दोषी मानकर उसे भीड़ से सजा दिलवाना एक जघन्य अपराध बनता जा रहा है। लोग पूरी लोकतांत्रिक व्यवस्था, कानून को अपने हाथों में लेते हैं, लेकिन विडंबना यह है कि इसकी उन्हें किसी अपराध के श्रेणी में भी नहीं रख पा रहे हैं। क्योंकि भारत में अभी भी भीड़ के लिए किसी प्रकार का कानून नहीं बना है। उन्होंने अपने शोध के निष्कर्ष में लिखा कि हम इस निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सकते हैं कि जो लोग इस तरह के कृत्य में शामिल होते हैं उनके दिमाग में क्या चल रहा होता है। उन्होंने कहा कि लगातार बढ़ रही ऐसी घटनाएं इस बात का सबूत हैं कि समाज में अव्यवस्था बढ़ रही है।

रिचर्ड पर्लाफ ने (2000) अपने शोध द प्रेस एंड लिंचिंग ऑफ अफ्रीकन्स अमेरिकन्स में लिखा है कि भीड़ द्वारा हत्या अब आम हो गई है। यह कोई नई बात नहीं रह गई है। अमेरिका में 1882 से 1968 के बीच 4742 मॉब लिंचिंग की घटना हुई है। इसमें 73 प्रतिशत लोग अश्वेत लोग थे।

बेली ऐमी ने (2011) में अपने शोध टारगेटिंग लिंच विक्टिम्स: सोशल मार्जिनेलिटी ऑर स्टेटस ट्रांसग्रेशन में पाया कि जो अश्वेत लोग समाज से ज्यादा कटे हुए होते हैं वो इस तरह के कृत्य में ज्यादा संलिप्त होते हैं। वहीं जो अश्वेत लोग समाज में आर्थिक रूप से योगदान दे रहे हैं या समाज से खुद को वंछित नहीं समझ रहे हैं, वे ऐसे मामलों में संलिप्त नहीं होते हैं।

शोध उद्देश्य

1. मॉब लिंचिंग पर युवाओं की राय का पता लगाना।
2. मॉब लिंचिंग के लिए जिम्मेदार कारकों का पता लगाना।
3. मॉब लिंचिंग से समाज के लिए उत्पन्न होने वाली चुनौतियों का पता लगाना।
4. मॉब लिंचिंग मामलों में मीडिया की भूमिका का पता लगाना।

शोध प्रविधि

इस अध्ययन के अंतर्गत हमने देश में तेजी से बढ़ रहे मॉब लिंचिंग पर भोपाल के युवाओं की राय जानने की कोशिश की है। इसके लिए दैवीय निदर्शन (रेंडम सेम्पलिंग) पद्धति का चयन किया है। भोपाल शहर के विभिन्न विश्वविद्यलयों के 110 युवाओं को सर्वेक्षण में शामिल किया गया है। प्रश्नवाली के जरिए 110 उत्तरदाताओं से विषय पर उनकी राय ली गई।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं प्रस्तुतिकरण

उम्र			लिंग		
	संख्या	%		संख्या	%
15-20	37	33.6	महिला	67	60.9
21-25	58	52.7	पुरुष	43	39.1
26-30	12	10.9			
31-35	1	0.9			
35 से अधिक	2	1.8			
कुल	110	100.0	कुल	110	100.0

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

सारणी के अनुसार इस शोध में 15-20 आयु वर्ग के 33.6%, 21-25 आयु वर्ग के सबसे अधिक 52.7%, 26-30 आयु वर्ग के 10.9%, 35 से अधिक आयु वर्ग के 1.8% और सबसे कम 0.9% लोग 31-35 उम्र वर्ग के लोग शामिल हुए। वहीं शोध में 60.9% महिलाएं और 39.1% पुरुष उत्तरदाताओं ने हिस्सा लिया।

शिक्षा			वर्ग		
	संख्या	%		संख्या	%
12वीं कक्षा तक	20	18.2	सामान्य	65	59.1
स्नातक	53	48.2	अन्य पिछड़ा वर्ग	33	30.0
स्नात्कोत्तर	30	27.3	अनुसूचित जाति	8	7.3
स्नात्कोत्तर से अधिक	7	6.4	अनुसूचित जनजाति	4	3.6
कुल	110	100.0	कुल	110	100.0

सारणी के अनुसार इस शोध में सबसे अधिक 48.2 % स्नातक, 27.3 % स्नात्कोत्तर, 18.2% 12वीं कक्षा तक और सबसे कम 6.4% स्नात्कोत्तर से अधिक स्तर के विद्यार्थियों ने भाग लिया। वहीं उत्तरदाताओं के वर्ग की बात करें तो सबसे अधिक 59.1% सामान्य वर्ग के, 30.0% उत्तरदाता अन्य पिछड़ा वर्ग, 7.3% अनुसूचित जाति और सबसे कम 3.6% अनुसूचित जाति और सबसे कम 3.6% अनुसूचित जनजाति वर्ग के उत्तरदाताओं ने शोध में भाग लिया।

मॉब लिंचिंग की घटनाओं के प्रति जागरुकता

	संख्या	%
बिल्कुल नहीं	13	11.8
कम	25	22.7
कह नहीं सकते	11	10
अधिक	45	40.9
बहुत अधिक	16	14.5
कुल	110	100

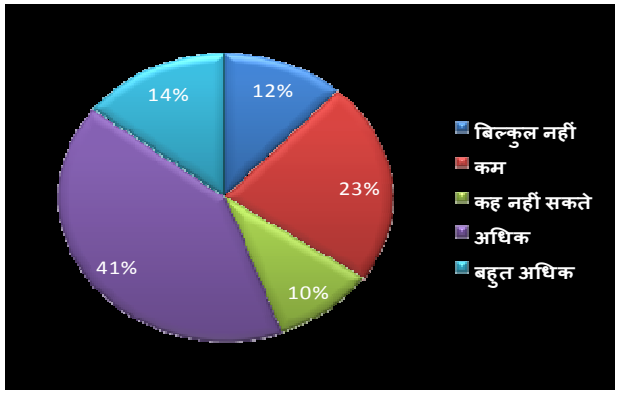

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

सारणी के अनुसार 40.9% युवाओं में मॉब लिंचिंग से संबंधित घटनाओं के प्रति अधिक जागरुकता है। वहीं 22.7% युवा इसके प्रति कम जागररूक हैं। वहीं सिर्फ 14.5% उत्तरदाताओं को मॉब लिंचिंग के बारे में बहुत अधिक जागरुकता है। 11.8% युवाओं को इस विषय से संबंधित बिल्कुल जागरुकता नहीं है।

आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि हाल के दिनों में मॉब लिंचिंग ज्यादा तेजी से बढ़ रही है और लोग उसके बारे में अधिक जागरुक हो रहे हैं। शोध के निष्कर्षों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मॉब लिंचिंग की तेजी से बढ़ती हुई घटनाए समाज में चिंताजनक है। पूर्व में हुए कुछ शोधों से यह पता चलता है कि ऐसा घटनाएं एकदम नवीन नहीं हैं पर तेजी से बढ़ने के साथ लोग अब इसके बारे में ज्यादा जागरुक हैं। वहीं निश्चित रूप से मॉब लिंचिंग की घटनाएं विभिन्न कारकों से बढ़ रही हैं।

मॉब लिंचिंग संबंधित खबरों के प्रसारण या प्रकाशन माध्यम

	संख्या	%
समाचार-पत्र	25	22.7
टीवी	28	25.5
रेडियो	1	0.9
सोशल मीडिया	47	42.7
अन्य	9	8.2
कुल	110	100

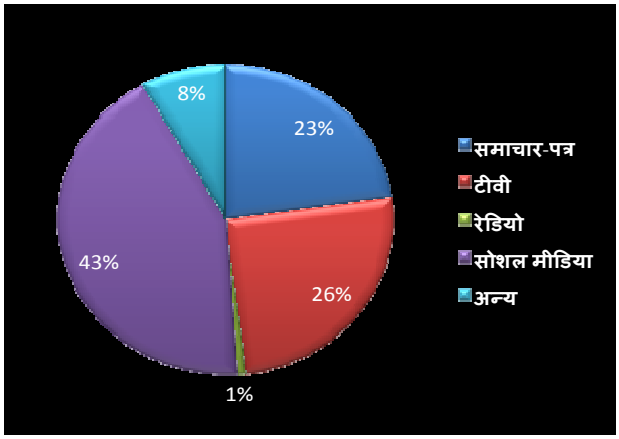

शोध में जब लोगों से यह पूछा गया कि किस माध्यम से मॉब लिंचिंग की खबरें सबसे ज्यादा प्राप्त होती हैं तो 42.7% उत्तरदाताओं ने सोशल मीडिया को अपनी पहली पसंद बताया। दूसरे नंबर पर 25.5 उत्तरदाताओं ने टीवी को रखा है। समाचार-पत्र के माध्यम से सिर्फ 22.7% उत्तरदाताओं को मॉब लिंचिंग की खबरें प्राप्त होती है। वहीं रेडियो इनसे काफी पीछे है।

आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि मॉब लिंचिंग की खबरों को प्रसारित करने में सोशल मीडिया की अहम भूमिका है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

मॉब लिंचिंग संबंधित खबरों पर नजर

	संख्या	%
बिल्कुल नहीं	9	8.2
कम	27	24.5
कह नहीं सकते	20	18.2
अधिक	41	37.3
बहुत अधिक	13	11.8
कुल	110	100

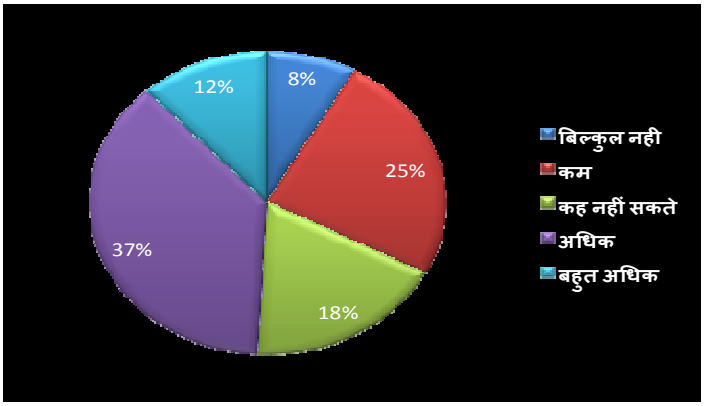

युवाओं से मॉब लिंचिंग संबंधित खबरों से रूबरू होने के संदर्भ में पूछा गया तो 37.3% उत्तरदाताओं ने कहा कि वो अधिक रूबरू होते हैं। वहीं 24.5% उत्तरदाताओं ने कहा कि वो मॉब लिंचिंग संबंधित खबरों को कम ही पढ़ते हैं। सिर्फ 11.8% उत्तरदाता मॉब लिंचिंग संबंधित खबरों को अधिक पढ़ते हैं। 8.2% उत्तरदाता ऐसे हैं जिनका मॉब लिंचिंग संबंधित खबरों से कोई सरोकार नहीं है।

मॉब लिंचिंग को भड़काने वाले विभिन्न मुद्दे

	गौ हत्या (%)	पशु तस्करी (%)	गोमांस उपभोक्ता (%)	बच्चा चोरी (%)	लव जिहाद (%)	बलात्कार (%)
बिल्कुल नहीं	7.3	5.5	8.2	8.2	3.6	9.1
कम	14.5	19.1	14.5	17.3	10.9	10.9
कह नहीं सकते	13.6	38.2	20.0	9.1	15.5	16.4
अधिक	33.6	19.1	29.1	38.2	35.5	24.5
बहुत अधिक	30.9	18.2	28.2	27.3	34.5	39.1
कुल	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

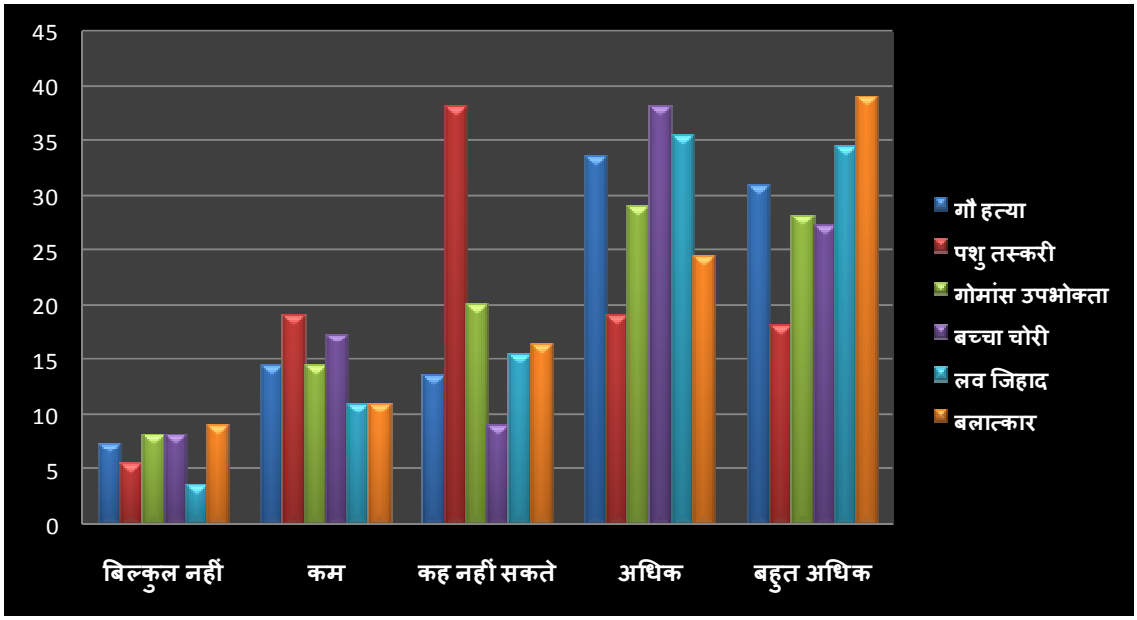

सारणी के अनुसार जो मुद्दे मॉब लिंचिंग की घटनाओं को बहुत अधिक भड़काते हैं, उसमें 39.1% उत्तरदाताओं ने बलात्कार को प्रथम स्थान पर रखा हैं। वहीं 34.5% ने लव जिहाद को दूसरे और 30.9% उत्तरदाताओं ने गौ हत्या को तीसरे स्थान पर रखा है।

सारणी के अनुसार अधिक श्रेणी की बात करें तो 38.2% उत्तरदाताओं ने बच्चा चोरी के मामले को प्रथम स्थान पर रखा है। वहीं 35.5% उत्तरदाताओं ने लव जिहाद को दूसरे और 33.6% उत्तरदाताओं ने गौ हत्या को तीसरे स्थान पर रखा है।

मॉब लिंचिंग को भड़काने वाले सामाजिक कारक

	धार्मिक आस्था (%)	अफवाह (%)	बेरोजगारी (%)	निरक्षरता (%)	सांप्रदायिक संवेदनशीलता (%)	दंडित न किए जाने से भयमुक्त (%)
बिल्कुल नहीं	8.2	4.5	8.2	5.5	4.5	7.3
कम	10.0	12.7	25.5	14.5	13.6	11.8
कह नहीं सकते	9.1	11.8	21.8	15.5	18.2	22.7
अधिक	36.4	40.9	24.5	32.7	30.0	27.3
बहुत अधिक	36.4	30.0	20.0	31.8	33.6	30.9
कुल	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0

सारणी के अनुसार यह ज्ञात हो रहा है कि बहुत अधिक की श्रेणी में धार्मिक आस्था को 36.4% लोगों ने मॉब लिंचिंग का सबसे बड़ा सामाजिक कारक माना है। वहीं सांप्रदायिक संवेदनशीलता को 33.6% और निरक्षरता को 31.8 लोगों ननें क्रमश: दूसरा और तीसरा स्थान दिया है। अफवाह को 30% और बेरोजगारी को 20% लोगों ने मॉब लिंचिंग की घटनाओं को उकसाने में कम योगदान माना है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

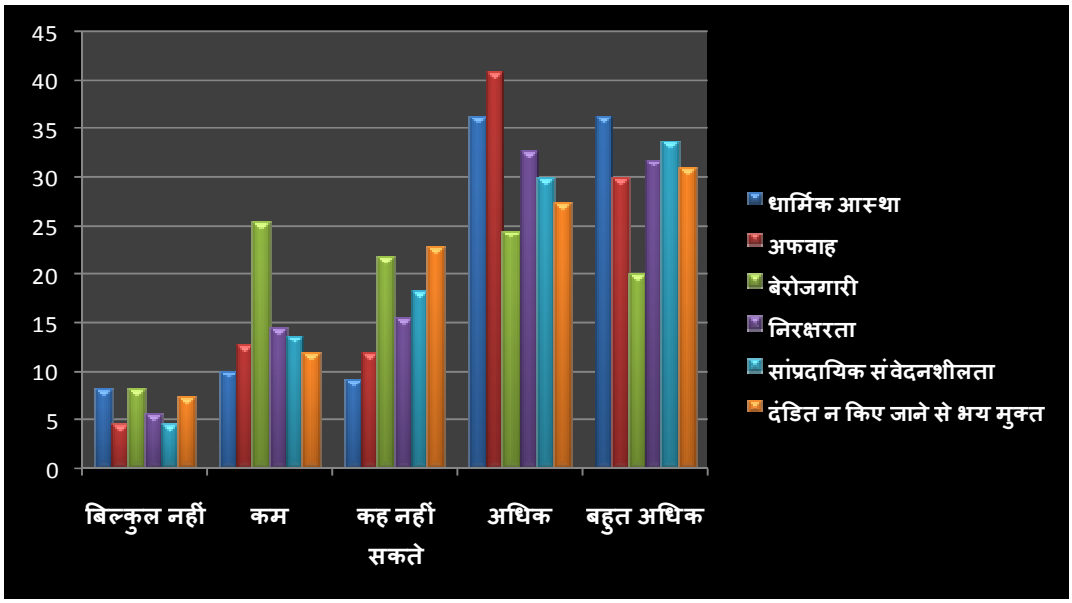

अगर हम अधिक श्रेणी की बात करें तो सबसे ज्यादा लोगों ने अफवाहों को माना है जिसके कारण मॉब लिंचिंग की घटनाएं होती हैं। इस श्रेणी में दूसरे स्थान पर लोगों ने धार्मिक आस्था को ही मॉब लिंचिंग के लिए जिम्मेदार सामाजिक कारक के रूप में देखा है।

मॉब लिंचिंग को भड़काने वाले मनोवैज्ञानिक कारक

	असुरक्षा (%)	अविश्वास (%)	बढ़ती सांप्रदायिक घृणा (%)	अधीरता (%)	तर्कहीन, भावनात्मक व्यवहार (%)	समुदाय की श्रेष्ठता (%)
बिल्कुल नहीं	2.7	4.5	1.8	2.7	4.5	3.6
कम	17.3	10.9	7.3	10.0	13.6	5.5
कह नहीं सकते	27.3	20.9	17.3	16.4	26.4	21.8
अधिक	33.6	40.9	41.8	42.7	27.3	38.2
बहुत अधिक	19.1	22.7	31.8	28.2	28.2	30.9
कुल	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0

आंकड़ों के विश्लेषण के अनुसार बढ़ती सांप्रदायिक घृणा सबसे बड़ा मनोवैज्ञानिक कारण है जो मॉब लिंचिंग जैसी घटनाओं को उकसाता है। 31.8% लोगों ने समाज में बढ़ती हुई सांप्रदायिक घृणा को मॉब लिंचिंग को उकसाने वाला सबसे बड़ा मनोवैज्ञानिक कारक माना है। वहीं 30.9% लोग समुदाय की श्रेष्ठता को दूसरा सबसे बड़ा मनोवैज्ञानिक कारक मानते हैं। अर्थात यह कह सकते हैं कि लोगों के दिमाग में संपद्राय, समुदाय प्राथमिकता है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

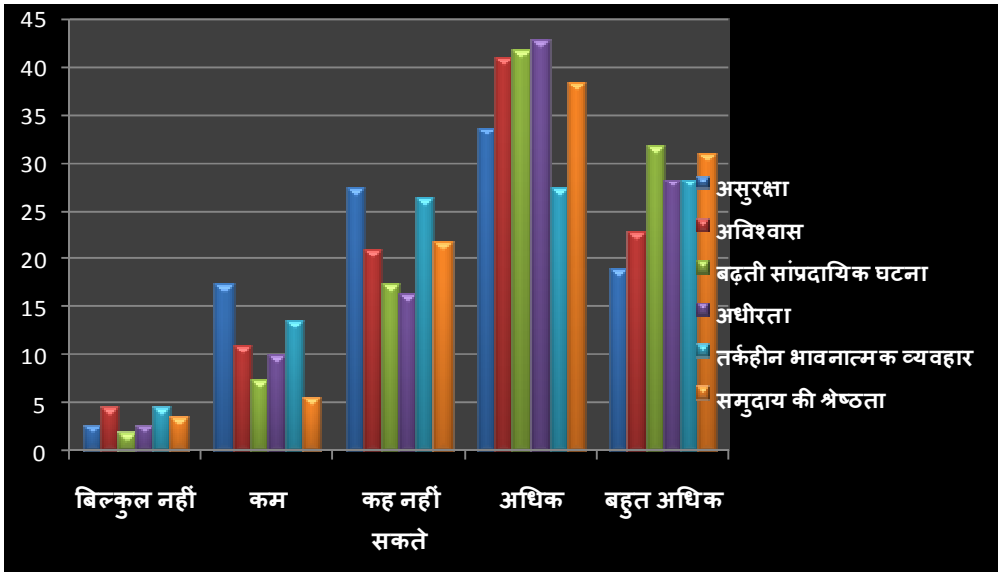

अधिक की श्रेणी की बात करें तो 42.7% लोगों ने माना है कि लोगों में बढ़ती अधीरता मॉब लिंचिंग को अधिक उकसाती है। वहीं बढ़ती सांपद्रायिक घटना भी इस श्रेणी में लोगों की नजर में बड़ा कारक है। अविश्वास को 40.9% लोगों ने तीसरे स्थान पर रखा है। 38.2% लोग समुदाय की श्रेष्ठता को अधिक की श्रेणी में मॉब लिंचिंग में भड़काने वाला कारक मानते हैं। मॉब लिंचिंग की घटनाओं में लोग मानिसक रूप से ज्यादा लिप्त हैं। उनकी नजर में उनके समुदाय की श्रेष्ठता, सांप्रदायिक घृणा प्राथमिकता पर है। यह ऐसे मनोवैज्ञानिक कारण हैं जो सामाजिक दृष्टि से चिंताजनक है। वहीं समाज की संरचना ऐसी बिगड़ती जा रह है कि लोग काफी हद तक अधीर होते जा रहे हैं, साथ ही उनमें अविश्वास भी बढ़ता जा रहा है। जो समाज को विच्छन्न करने वाली इस तरह की घटनाओं को उकसाने का काम करती हैं या कहें की बढ़ावा देती हैं।

मॉब लिंचिंग को उकसाने वाले राजनीतिक कारक

	राजनीति में धर्म का सम्मिश्रण (%)	कानून व्यवस्था में अविश्वास (%)	भ्रष्ट कानूनी प्रक्रिया (%)	नेताओं के उत्तेजक भाषण (%)	अस्थापित कानून (%)	राजनेताओं की चुप्पी (%)
बिल्कुल नहीं	5.5	0.9	2.7	6.4	4.5	5.5
कम	5.5	9.1	8.2	7.3	9.1	6.4
कह नहीं सकते	10.9	11.8	20.0	13.6	21.8	10.9
अधिक	36.4	40.0	33.6	39.1	29.1	30.9
बहुत अधिक	41.8	38.2	35.5	33.6	35.5	46.4
कुल	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	5.5

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

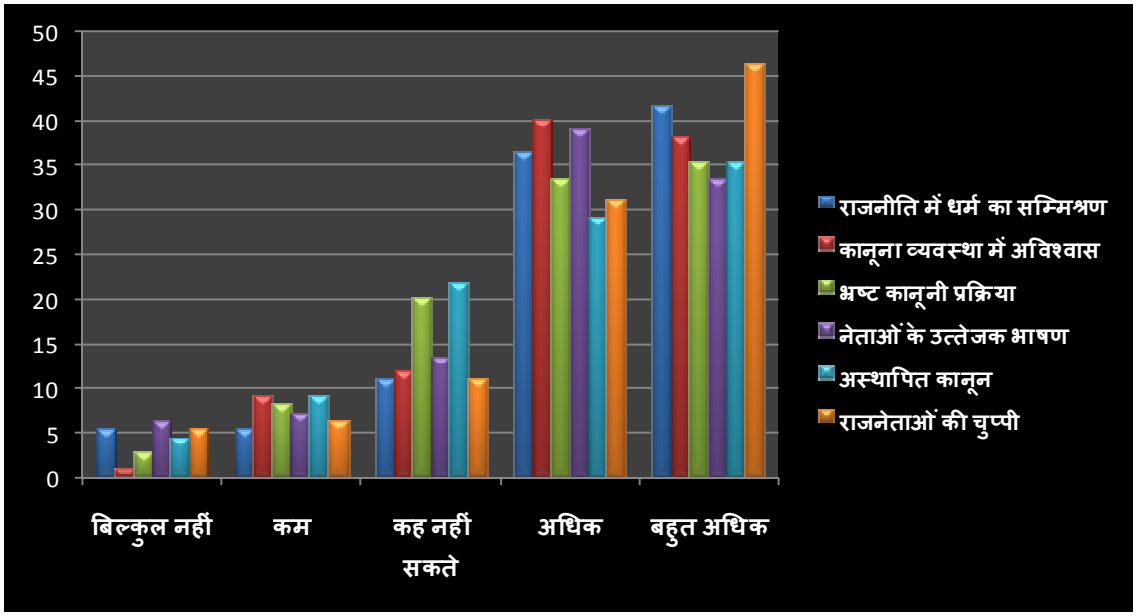

आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि लोग राजनीति में धर्म के सम्मिश्रण को बहुत अधिक रूप से ऐसी घटनाओं के लिए जिम्मेदार समझते हैं। 41.8% उत्तरदाता मानते हैं कि मॉब लिंचिंग जैसी घटनाएं सिर्फ राजनीति की उपज हैं और राजनीति में जिस तेजी से धर्म को शामिल किया जा रहा है वह चिंताजनक है। वहीं राजनेताओं की चुप्पी को भी 46.4% लोग मॉब लिंचिंग के लिए महत्वपूर्ण राजनीतिक कारक के रूप में देखते हैं। अर्थात यह कहा जा सकता है कि राजनैतिक रूप से इस मामले पर ध्यान दिया जाए तो इससे निपटा जा सकता है। 38.2 % लोग ने कानून व्यवस्था में बढ़ता अविश्वास, 35.5 % लोग ने भ्रष्ट कानूनी प्रक्रिया और 33.6 % उत्तरदाताओं ने नेताओं के उत्तेजक भाषण को मॉब लिंचिंग को उकसाने वाले राजनीतिक कारक के रूप में माना है।

मॉब लिंचिंग और युवाओं की अवधारणा

	लोकतंत्र को खतरा (%)	सामाजिक संरचना का विध्वंस (%)	न्यायिक और कानून व्यवस्था को चुनौती (%)	धर्मनिरपेक्षता को चुनौती (%)	अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को प्रतिबंध (%)
बिल्कुल नहीं	9.1	3.6	5.5	6.4	5.5
कम	20.0	12.7	10.0	10.0	14.5
कह नहीं सकते	13.6	27.3	20.0	23.6	21.8
अधिक	28.2	33.6	33.6	38.2	26.4
बहुत अधिक	29.1	22.7	30.9	21.8	31.8
कुल	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

सारणी के अनुसार शोध में 38.2% शामिल युवा उत्तरदाता अधिक स्तर पर मानते हैं कि मॉब लिंचिंग की घटनाएं धर्मनिरपेक्षता को चुनौती है। वहीं 28.2 % युवा इसे लोकतंत्र को खतरा अधिक मानते हैं। उनके अनुसार मॉब लिंचिग की लगातार बढ़ रहीं घटनाएं सीधे तौर पर लोकतंत्र को चुनौती है। समान रूप से 33.6 % युवा मॉब लिंचिंग की घटनाओं को सामाजिक संरचना के विध्वंस एवं न्यायिक और कानून व्यवस्था को चुनौती के रूप में देखते हैं।

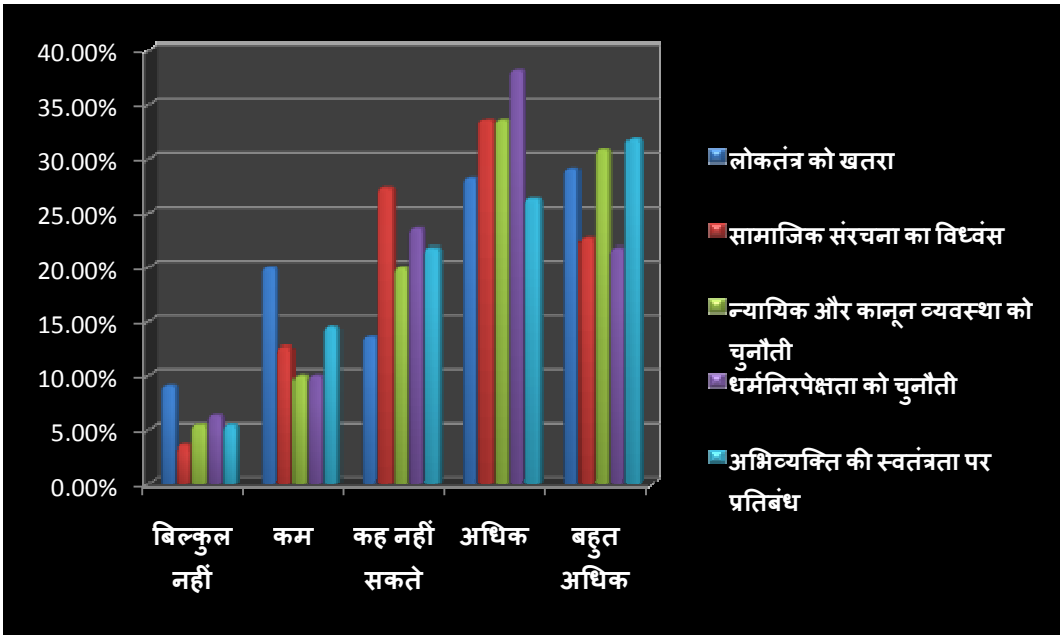

बहुत अधिक की बात करें तो 30.9 प्रतिशत युवा उत्तरदाता इसे न्यायिक और कानून व्यवस्था को चुनौती के रूप में देखते हैं।

मॉब लिंचिंग को उकसाने में जिम्मेदार मीडिया तत्व

	फेक न्यूज	मीडिया संस्थाओं का राजनैतिक झुकाव	मामले पर मीडिया का कम ध्यान	सोशल मीडिया पर अफवाहें	मामले पर मीडिया का तूल देना
बिल्कुल नहीं	5.5	2.7	-	2.7	1.8
कम	4.5	8.2	20.0	3.6	6.4
कह नहीं सकते	5.5	19.1	20.0	8.2	19.1
अधिक	33.6	45.5	39.1	40.0	34.5
बहुत अधिक	50.9	24.5	20.9	45.5	38.2
कुल	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

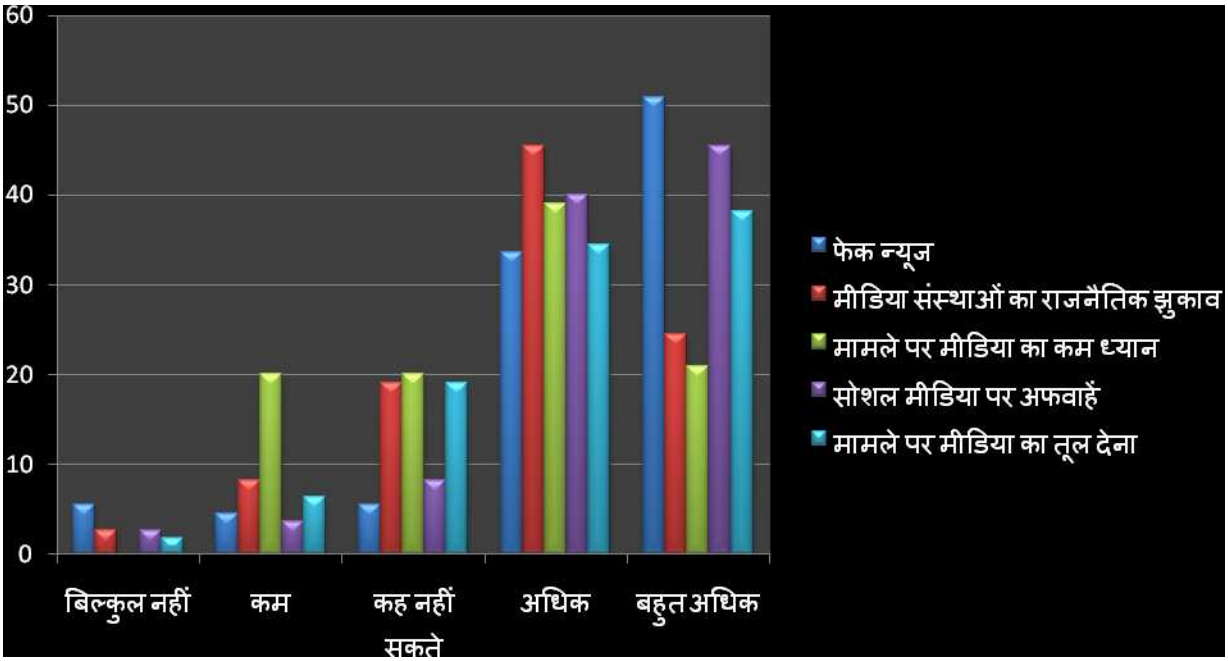

आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि मीडिया के फेक न्यूज को 50.9 % उत्तरदाता मॉब लिंचिंग के लिए बहुत अधिक जिम्मेदार मानते हैं। वहीं 45.5 % उत्तरदाता सोशल मीडिया पर फैलने वाली अफवाहों को और 38.2 % मामले पर मीडिया द्वारा जबरन तूल दिए जाने को मॉब लिंचिंग जैसी घटनाओं के लिए जिम्मेदार मानते हैं। सिर्फ 24.5 % उत्तरदाता मीडिया संस्थाओं के राजनीतिक पार्टी की तरफ झुकाव को ऐसी घटनाओं के लिए जिम्मेदार मानते हैं।

अधिक श्रेणी की बात करें तो 45.5 % उत्तरदाता मीडिया संस्थाओं का राजनीतिक पार्टी के तरफ झुकाव को मॉब लिंचिंग की घटनाओं के लिए जिम्मेदार मानते हैं। वहीं 40.0 % अधिक की श्रेणी में भी सोशल मीडिया पर फैलने वाल अफवाहों को इसके लिए जिम्मेदार मानते हैं। यह कहा जा सकता है कि लोग मीडिया को ऐसी घटनाओं के लिए जिम्मेदार मानते हैं।

मॉब लिंचिंग और युवाओं की राय

	राजनीति से प्रेरित	अधिक प्रचार-प्रसार	कमजोर कानून व्यवस्था का परिणाम	मुख्यत: कमजोर वर्ग और अल्पसंख्यक शिकार	समाज में बढ़ती सांपप्रदायिक कड़वाहट का परिणाम	कृत में शामिल लोगों को राजनीतिक लाभ	मजबूत कानून और राजनैतिक कार्यवाही से नियंत्रण
पूर्ण असहमत	4.5	0.9	1.8	2.7	1.8	-	0.9
असहमत	9.1	6.4	8.2	18.2	9.1	7.3	6.4
कह नहीं सकते	27.3	30.9	22.7	22.7	17.3	26.4	15.5

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

सहमत	39.1	47.3	37.3	34.5	40.0	38.2	20.0
पूर्ण सहमत	20.0	14.5	30.0	21.8	31.8	28.2	57.3
कुल	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0	100.0

आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि लोग पूर्ण रूप से सहमत इस बात से हैं कि मजबूत कानून और उचित राजनैतिक कार्यवाही से ही मॉब लिंचिंग जैसे जघन्य कृत्य से समाज को छुटकारा दिलाया जा सकता है। वहीं 31.8 % युवा इस बात से भी सहमत हैं कि मॉब लिंचिंग समाज में बढ़ती सांप्रदायिक कड़वाहट का ही परिणाम है। अर्थात हम यह कह सकते हैं कि जिस तेजी से मॉब लिंचिंग की घटनाएं बढ़ रही हैं वो इस बात का परिणाम है कि समाज में पिछले कुछ समय से सांप्रदायिक कड़वाहट आपस में बढ़ी है जो कि अच्छा सूचक नहीं है। 28.2 % लोग पूर्ण रूप से इस बात को भी मानते हैं भीड़ हिंसा में शामिल लोगों को राजनीतिक सुरक्षा या लाभ निश्चित रूप से प्राप्त होता है। वहीं सिर्फ 21.8 % लोगों का मानना है कि ऐसी घटनाओं का शिकार से समाज के कमजोर वर्ग या अल्पसंख्यक वर्ग के लोग हो रहे हैं।

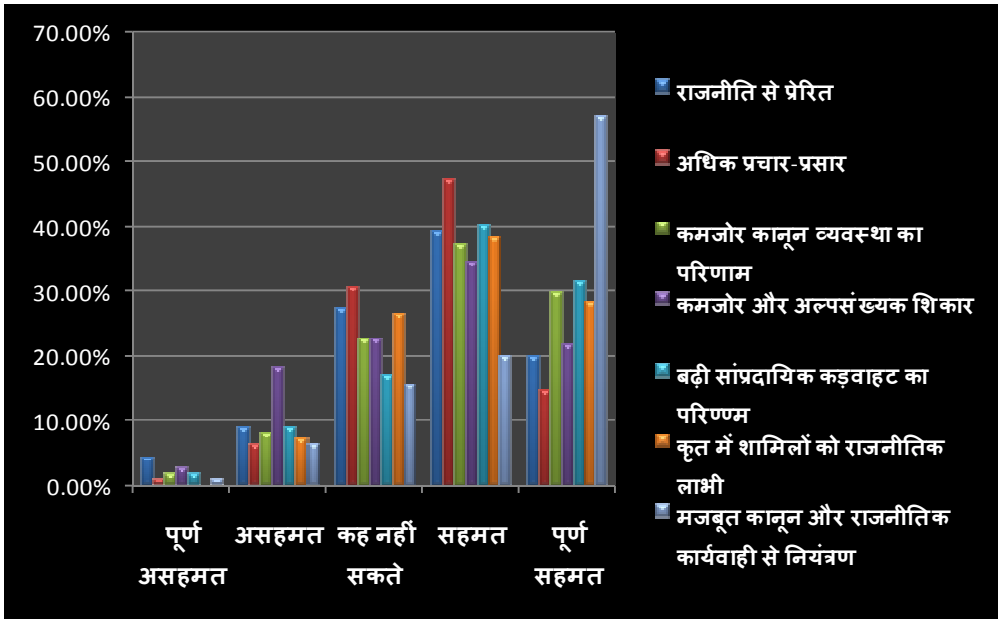

39.1 % लोगों ने पूर्ण सहमति न जताते हुए सिर्फ सहमती जताई है कि मॉब लिंचिंग संबंधित घटनाएं राजनीति से प्रेरित हैं। वहीं अधिकतम 47.3 % उत्तरदाता ने इस बात पर सिर्फ सहमती जताई है कि मॉब लिंचिंग संबंधित घटनाओं को अधिक प्रचार-प्रसार किया जा रहा है, बिना बात के तूल दी जा रही है। ऐसी घटनाओं में केवल समाज के कमजोर वर्ग और अल्पसंख्यक लोग प्रभावित हो रहे हैं इस पर 34.5 % उत्तरदाताओं ने अपनी सहती जताई है।

निष्कर्ष

विवेचनात्मक प्ररचना पर आधारित इस शोध में युवाओं की राय जानी गई, जिसमें यह साफ तौर पर पता चलता है कि स्थापित कानून और उचित राजनीतिक कार्यवाही से समाज में फैल रहे मॉब

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

लिंचिंग जैसे जघन्य अपराध को रोका जा सकता है। युवाओं के अनुसार ऐसे मामलों को कई बार बेवजह तूल भी दिया जाता है। वहीं वो यह नहीं मानते हैं कि मॉब लिंचिंग घटनाओं में पीड़ित सिर्फ समाज का कमजोर या अल्पसंख्यक वर्ग होता है। चैनलों पर फेक न्यूज और सोशल मीडिया पर तेजी से फैलती अफवाहें ऐसी मॉब लिंचिंग जैसी घटनाओं को भड़काती हैं। युवा मानते हैं कि ऐसी घटनाएं लोकतंत्र को चुनौती तो है ही उससे कहीं ज्यादा सामाजिक संरचना का ह्रास के लिए ज्यादा जिम्मेदार है। साथ ही ऐसी घटनाएं कानून व्यवस्था के लिए भी बड़ी चुनौती है। युवाओं का यह भी मानना है कि ऐसे कुछ महत्वपूर्ण राजनीतिक कारक है जो भारतीय समाज में मॉब लिंचिंग जैसी घटनाओं को उकसाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। इसमें राजनीति में धर्म का सम्मिश्रण और राजनेताओं की चुप्पी को सबसे बड़ा कारक मानते हैं। अर्थात युवाओं का मानना है कि राजनेता चाहें तो ऐसे मामलों पर नियंत्रण किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. **संगमा, अनार्ल्ड.(2017). मॉब लिंचिंग: एन अप्राइजिंग ऑफेंस नीडेड टू बी स्ट्रेन्यूस अंडर द इंडियन लीगल सिस्टम.** ***"इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एकेडमिक रिसर्च एंड डेवेलपमेंट", 2(4), 292-34.*** **प्राप्त किया गया 07 अगस्त 2018, अपरान्ह 12:25,** file:///C:/Users/owner's/Downloads/2-4-15-139.pdf.

[2]. **पर्लाफ, रिचर्ड. (2000). द प्रेस एंड लिंचिंग ऑफ अफ्रीकन्स अमेरिकन्स.** ***" द जर्नल ऑफ ब्लैक स्टडीज", 30(3), 315-330.*** **प्राप्त किया गया 07 अगस्त 2018, अपरान्ह 12:39,** https://www.jstor.org/stable/2645940?seq=1#page_scan_tab_contents.

[3]. **बेली, ऐमी. (2011). टार्गेटिंग लिंच विक्टीम्स: सोशल मार्जिनेलीटि ऑर स्टेटस ट्रांसग्रेशन. प्राप्त किया गया 07 अगस्त 2018, अपरान्ह 03:26,** https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC4107210**/.**

[4]. **पटेल, आकार. (2018). मॉब लिंचिंग: लैक ऑफ मीडिया कवरेज, रिस्पॉन्स फ्रॉम स्टेट शो इंडियन्स डॉन्ट केयर अबाउट स्टॉपिंग रॉग जस्टिस. प्राप्त किया गया 09 अगस्त 2018 पूर्वान्ह 11:50,** https://www.firstpost.com/india/tripura-lynching-lack-of-media-coverage-response-from-state-show-indians-dont-care-about-stopping-mob-justice-4639041.html.

[5]. **डे, अभिषेक. (2018). एज चाइल्ड लिफ्टिंग र्यूमर्स स्प्रेड, पुलिस अक्रॉस इंडिया स्टार्ट आउटरिच यूनिट्स टू क्वेल फेक न्यूज. प्राप्त किया गया 09 अगस्त 2018 पूर्वान्ह 11:55,** https://scroll.in/article/885082/child-lifting-rumours-as-social-media-provokes-mobs-indian-police-struggle-to-dispel-fake-news.

[6]. डेका, कौशिक. दत्ता, दम्यंती. (2017). मॉब लिंचिंग इंडियाज शॉकिंग वार विदिन चैलेंज नरेन्द्र मोदी मस्ट कंफ्रंट. प्राप्त किया गया 09 अगस्त 2018 पूर्वान्ह 11:40, https://www.indiatoday.in/magazine/cover-story/story/20170724-lynching-india-beef-ban-muslims-india-jharkhand-delhi-mathura-1023999-2017-07-14.

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**